Our Website- https://thehindipage.com/blog/
Join Telegram- https://t.me/siddhivinayakpariwarsangaria
Our Youtube Channel- https://www.youtube.com/channel/UCJlUDM0uPIL7kEO0ZMdDcHg

SMILE – SAT : 06

भूगोल : कक्षा – 12

LESSON – 13 (भारत : जनसंख्या वितरण,घनत्व एवं वृद्धि)

संसाधन संरक्षण के लिए प्रमुख रूप से निम्नलिखित 10 विधियाँ महत्वपूर्ण हैं –

1. जनसंख्या वृद्धि पर प्रभावी नियन्त्रण:

संसाधनों की उपलब्धता की तुलना में जब जनसंख्या में अधिक वृद्धि हो जाती है तब संसाधनों के शोषण की गति बढ़ जाती है। ऐसी स्थिति में अनव्यकरणीय संसाधनों का अति विदोहन होने से अनव्यकरणीय संसाधन शीघ्र ही समाप्त होने लगते हैं। अत: किसी देश में संसाधन संरक्षण के लिए जनसंख्या वृद्धि पर प्रभावी नियन्त्रण अति आवश्यक होता है।

2. नियोजन में समग्र दृष्टिकोण:

पर्यावरण के विभिन्न घटकों का समुचित उपयोग व संरक्षण नियोजन में समग्र दृष्टिकोण कहलाता है। पर्यावरण के विभिन्न घटक अन्तर्सम्बन्धित होते हैं। पर्यावरण के एक घटक में कमी या क्षरण से सम्पूर्ण पर्यावरण में असंतुलन उत्पन्न हो जाता है।

अतः देश की विकास योजनाएँ बनाने तथा उनके क्रियान्वयन में पर्यावरण की इस समग्रता को दृष्टिगत रखना आवश्यक है। ऐसा करने से एक ओर पर्यावरण संतुलन को कायम रखने में सहायता मिलती है वहीं दूसरी ओर संसाधन संरक्षण में भी योगदान होता है।

3. जैविक सन्तुलन बनाए रखना:

मानव अस्तित्व के लिए जल, वायु, वनस्पति तथा जीव-जन्तु प्रमुख आधारभूत जैविक आधार माने जाते हैं अत: मानव के सतत विकास तथा संसाधनों के संरक्षण के लिए जैविक सन्तुलन को दृष्टिगत रखकर आर्थिक नियोजन कार्यक्रमों का क्रियान्वयन आवश्यक है।

जैविक असन्तुलन, पर्यावरण प्रदूषण तथा पारिस्थितिकी असन्तुलन की समस्याएँ उत्पन्न करता है जिसमें मानव के आर्थिक विकास के स्थान पर विनाश की सम्भावनाएँ बलवती हो जाती हैं।

4. ऊर्जा के गैर-पारम्परिक संसाधनों का अधिकतम उपयोग:

संसाधनों के संरक्षण के लिए सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा, ज्वारीय ऊर्जा तथा तापीय ऊर्जा जैसे नव्यकरणीय एवं गैर-पारम्परिक ऊर्जा संसाधनों का अधिकाधिक उपयोग आवश्यक है। इससे पेट्रोलियम, कोयला तथा परमाणु खनिजों का संरक्षण तो होता ही है साथ ही पर्यावरण प्रदूषण की समस्या को न्यूनतम किया जा सकता है।

5. वैकल्पिक संसाधनों की खोज:

विश्व में अनुव्यकरणीय संसाधनों के सीमित भण्डार है अत: ऐसे संसाधनों के विकल्पों की खोज़ कर उनका उपयोग करना आवश्यक है जिससे अनव्यकरणीय संसाधनों की उपलब्धता आने वाली पीढ़ियों को प्राप्त होती रहे। उदाहरण के लिए ऊर्जा के गैर परम्परागत स्रोतों को विकसित कर कोयला तथा पेट्रोलियम संसाधनों की उपलब्धता अवधि को बढ़ाया जा सकता है।

6. प्राथमिकता के आधार पर उपयोग:

प्रकृति में सीमित तथा समाप्य संसाधनों को अति आवश्यक होने पर तथा राष्ट्रीय महत्व के कार्यों में ही उपयोग करना चाहिए साथ ही ऐसे संसाधनों के विकल्पों का अधिकाधिक उपयोग करना आवश्यक है।

7. पुनर्चक्रण:

इस विधि में किसी धातु का एक बार उपयोग करने के बाद उसके खराब होने पर गलाकर पुन: उपयोग किया जाता है। यह संसाधन संरक्षण की एक उपयोगी व महत्त्वपूर्ण विधि है।

8. कृत्रिम वस्तुओं का उपयोग:

प्राकृतिक संसाधनों के उपयोग के स्थान पर वैकल्पिक रूप में कृत्रिम पदार्थों के उपयोग को बढ़ावा देने से प्राकृतिक संसाधनों की उपलबधता को लम्बे समय तक कायम रखा जा सकता है। उदाहरण के लिए। लकड़ी के सामान के स्थान पर प्लास्टिक सामान का उपयोग।

9. उन्नत एवं परिष्कृत तकनीक का उपयोग:

प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग करते समय यदि उन्नत व परिष्कृत तकनीक का उपयोग किया जाता है तो उससे ऊर्जा एवं अन्य संसाधनों की बचत की जा सकती है। उदाहरण के लिए बहुमंजिली इमारतों के निर्माण से भूमि संसाधनों की बचत।

10. संसाधनों का बहुउद्देशीय उपयोग:

एक ही परियोजना के क्रियान्वयन से जब कई उद्देश्यों की आपूर्ति होती है तो ऐसी परियोजनाएँ बहुउद्देशीय परियोजनाएँ कहलाती हैं। ऐसी परियोजना से संसाधनों के संरक्षण में सहायता मिलती है।

उदाहरण के लिए नदियों पर बाँध निर्माण से सिंचाई, पेयजल, विद्‌युत उत्पादन, मत्स्यपालन, बाढ़ नियन्त्रण, वन विकास, मृदा संरक्षण, भूमिगत जलस्तर में वृद्‌धि तथा जल परिवहन जैसे अनेक उद्‌देश्य पूरे होते हैं।

मुकेश जाखड़
व्याख्याता (भूगोल)
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय,
अमरपुरा जालू, संगरिया (हनुमानगढ)
वाट्सएप्प– 8890234772